



दादी का बटुआ

कहानी: अक्षय कुमार दीक्षित
चित्र: निलेश गहलोत



दादी का बटुआ

Daadi Ka Batua

लेखन : अक्षय कुमार दीक्षित

चित्र : निलेश गहलोत

संपादकीय सहयोग : हीना परवीन

प्रथम संस्करण : 2023

मुद्रक :

लेआउट और डिजाईन : स्टेला डिजाईन ऐंड प्रिंट

प्रकाशक :

लैंग्वेज ऐंड लर्निंग फाउंडेशन

डी - 26 , एन. डी. एस. ई. पार्ट - II

फ्रंट ग्राउंड फ्लोर , नई दिल्ली - 110049

फोन - 011-41092724

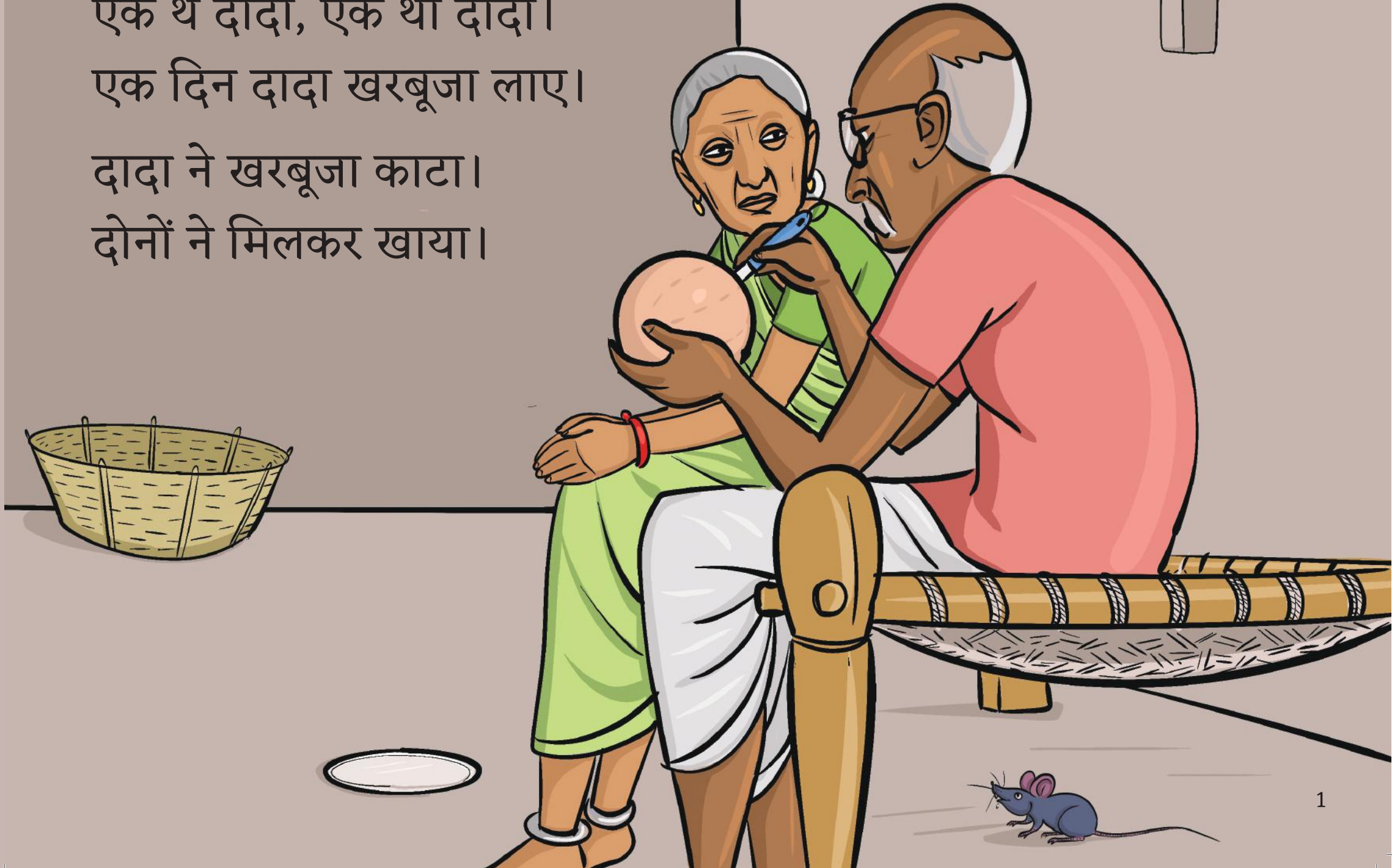
ISBN 978-81-957414-8-9



© Language and Learning Foundation

इस किताब के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बाद ही इस पुस्तक के किसी भी अंश का उपयोग किया जा सकता है।

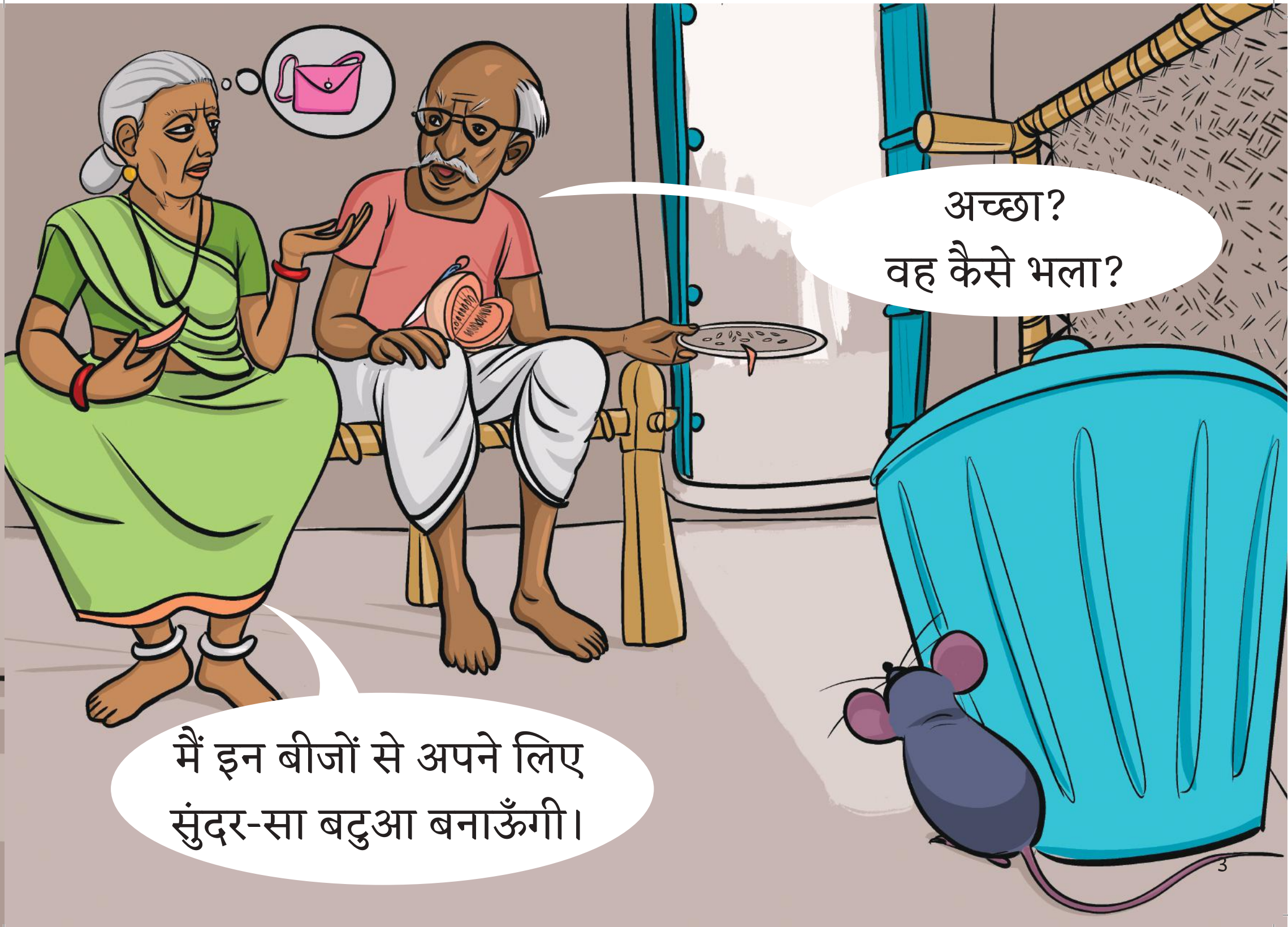
एक थे दादा, एक थी दादी।
एक दिन दादा खरबूजा लाए।
दादा ने खरबूजा काटा।
दोनों ने मिलकर खाया।





मैं ये बीज और गूदा
कूड़ेदान में डाल देता हूँ।

नहीं, नहीं, रुको।



अच्छा?
वह कैसे भला?

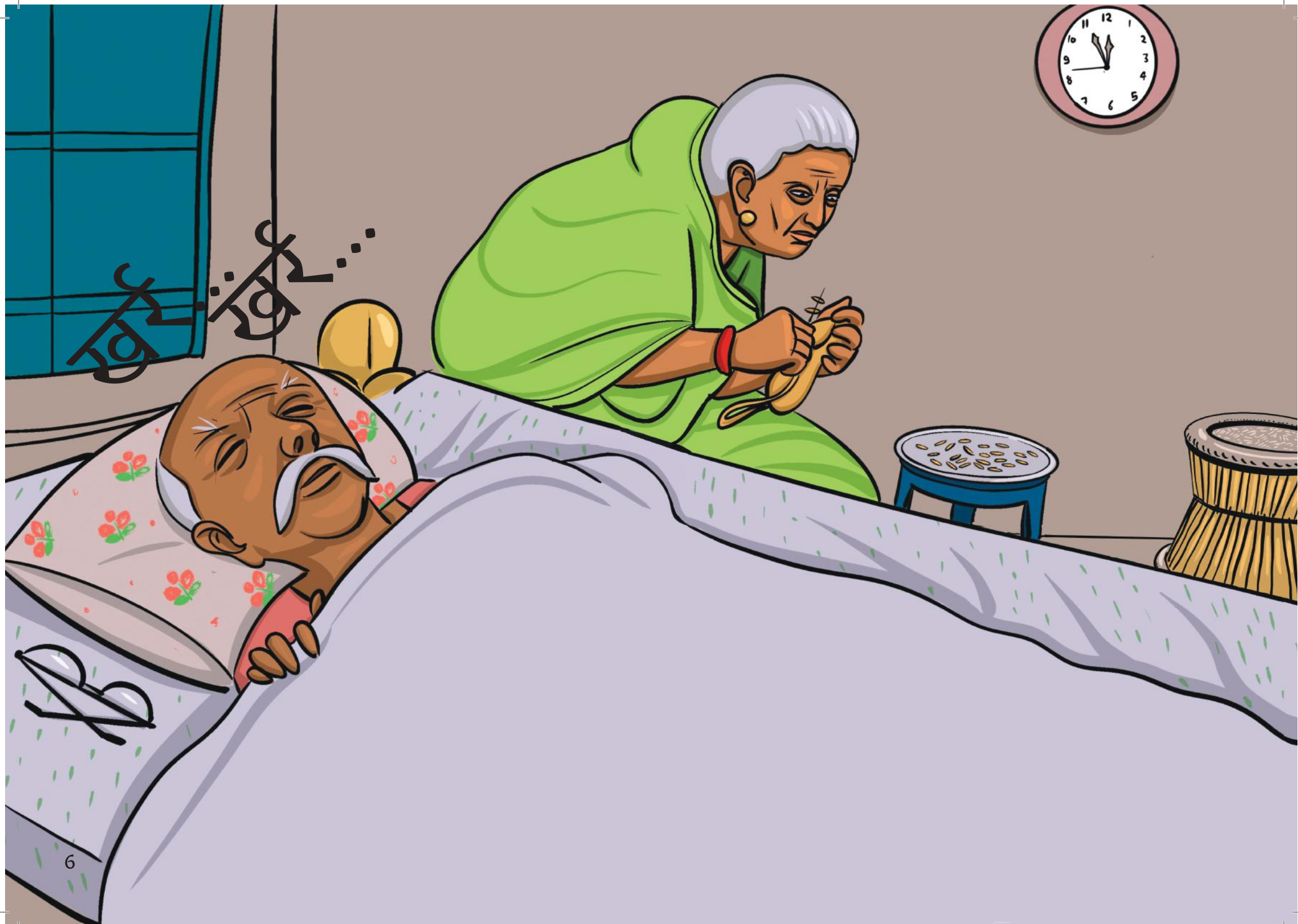
मैं इन बीजों से अपने लिए
सुंदर-सा बटुआ बनाऊँगी।

बस, आप कल
सुबह तक
इंतज़ार कीजिए।



दादी ने गूदे में से बीज अलग
करके धूप में सुखा दिए।





रात को दादा खाना खाकर सो गए।
दादी ने एक सुई-धागा लिया और
बीजों को धागे में पिरोने लगीं।



खर...खर....

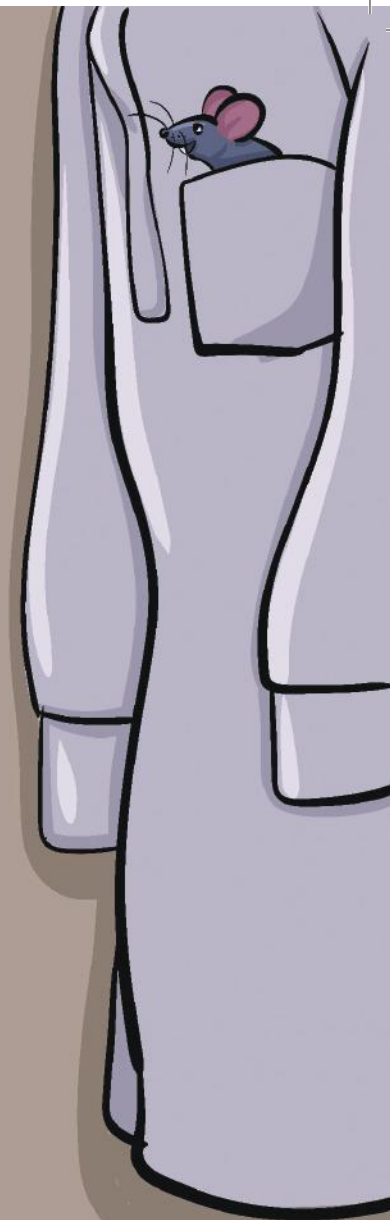
दादी ने एक बीज पिरोया, दूसरा
बीज पिरोया, तीसरा बीज पिरोया।
बीज पिरोती गई....



आखिरकार, दादी का बटुआ पूरा हो गया।
बटुआ बहुत सुंदर था।

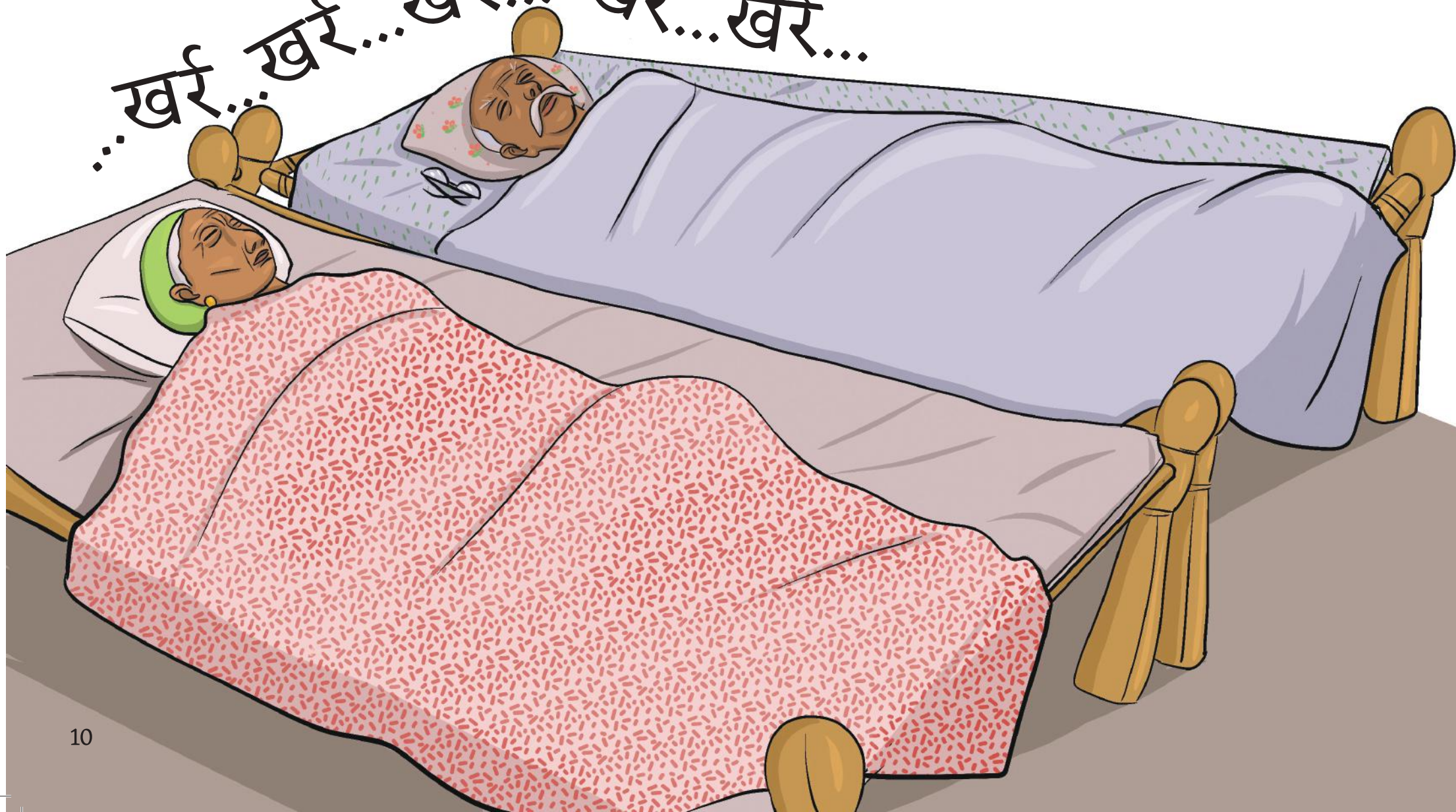
यह बटुआ मैं
खूँटी पर टाँग
देती हूँ।

खर्र...खर्र....



दादी थक गई थीं। लेटते ही उन्हें भी नींद आ गई।

...खर्र...खर्र...खर्र...खर्र...



सुबह हुई। दादा-दादी की आँख खुली।

लाओ भाई, दिखाओ
कहाँ है तुम्हारा बटुआ?
हम भी तो देखें।

देखोगे तो आँखें
खुली की खुली
रह जाएँगी।



दादी ने खूँटी पर देखा...
बटुआ तो वहाँ था ही नहीं!

अरे, मेरा बटुआ
कहाँ गया?

आप ही बताओ,
दादी का बटुआ
कहाँ गया



दादी ने फल के बीज से बनाया खूबसूरत बटुआ। दादी ने एक रात में ही बटुआ बना दिया और टाँग दिया खूँटी पर। मगर सुबह उठने पर दादी का बटुआ गायब हो गया? बटुआ गया कहाँ?

लैंग्वेज ऐंड लर्निंग फाउंडेशन (LLF) बच्चों में बुनियादी साक्षरता कौशल और पढ़ने की आदत के विकास के लिए कार्य करता है और इसी क्रम में बच्चों के लिए विविध प्रकार के बाल साहित्य की उपलब्धता पर जोर देता है। पढ़ना सीख रहे बच्चों के लिए रोचक चित्रों के साथ बना बाल साहित्य उनके पढ़ने सीखने के सफ़र में गति उत्पन्न करता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए LLF, 5-9 साल के बच्चों के लिए उपयुक्त और रोचक बाल साहित्य की रचना कर रहा है जिसके तहत कहानी की किताबें विकसित की जा रही हैं।

LLF द्वारा प्रकाशित किताबें 5 से 9 साल तक के बच्चों को ध्यान में रखते हुए इन 3 स्तरों में रखी गई हैं।

